वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

राष्ट्रीय चेतना के संवाहक कवि : रामधारी सिंह दिनकर

डॉ. आशीष कुमार तिवारी
सह.आचार्य - हिंदी विभाग
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय छतरपुर

शोध सार

राष्ट्र एक समूहवाची शब्द है और राष्ट्र के इस समूह को सामान्यतः जो नाम दिया जाता है वह है जन या जनता, जो कि कृत्रिम नहीं, अपितु जीवन सत्ता है, जो स्वयं विकसित होकर पुष्ट तथा बलशाली होती है एवं संगठन का निर्माण करती है। संगठन का आधार प्रेम है और यही आपसी प्रेमभाव जनता रूपी समूह तथा राष्ट्र के मध्य स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होता है। राष्ट्रीय चेतना से व्यापक अर्थ का बोध होता है जिसमें राष्ट्र की अस्मिता की रक्षा, राष्ट्र का गौरव-गान, राष्ट्र का परिवेश, राष्ट्र का उन्मेष और राष्ट्र के प्रति उस देश के नागरिकों की समग्र सोच और अनुभूति समाहित होती है। हिंदी कविता में राष्ट्रीयता की प्रवृत्ति का एक लंबा इतिहास है। इस प्रवृत्ति के प्रतिनिधि के तौर पर हम रामधारी सिंह 'दिनकर' को देखते हैं। दिनकर राष्ट्रीयता की स्थापित पहचान और स्थापना के मूल्यों के दोआब हैं। सच में यहीं से कोई कवि या चिंतक राष्ट्रीय भारतीयता को प्रस्तुत कर सकता है। इस अर्थ में दिनकर भारतीय राष्ट्रीयता से बढ़ कर राष्ट्रीय भारतीयता के कवि है।दिनकर की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना समग्रता में दिखाई देती है। क्योंकि वह पहले भारतीयता के कवि हैं जो बाद में राष्ट्रीयता के रूप में पहचान बन कर प्रवृत्ति के रूप में उभरती है। वह राष्ट्रीयता की आड़ में भारतीय नहीं, उनकी भारतीयता राष्ट्रीयता के रूप में अपनी पहचान बनाती है। इसलिए उन्होंने उन सत्ताधीशों के खिलाफ बेबाक होकर लिखा लिखा है, जो राष्ट्रीयता के रंगे चोले में अभारतीयता को ढके रहते हैं।

बीज शब्द

राष्ट्रीयता, समग्रता, प्रतिनिधि, दुर्व्यवस्था, परतन्त्र, उद्वेलित, सांस्कृतिक।

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

भूमिका

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' हिन्दी साहित्याकाश के दिनकर-सदृश्य ही थे। दिनकर का आविर्भाव उस समय हुआ, जब छायावाद अपने चरमोत्कर्ष पर था। प्रारंभ से ही दिनकर की कविताओं में अपने देश के स्वर्णिम अतीत के प्रति मोह और ब्रिटिशकालीन भारत की दुरवस्था और परतंत्रता के प्रति क्षोभ और आक्रोश की अभिव्यक्ति हुई है। यह निर्विवाद है कि दिनकर अपने युग के सर्वाधिक प्रतिनिधि कवि थे। उनकी काव्य रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना अपने परवान पर चढ़ी है। वे राष्ट्र की वाणी में बोलते थे। उनकी रचनाओं में राष्ट्र की वाणी मुखरित हुई है। दिनकर ने अपनी कविताओं के माध्यम से राष्ट्र के अतीत का स्मरण किया है। अपनी प्रसिद्ध कविता 'हिमालय' में उन्होंने अपने राष्ट्र के अतीत का पुनरांकन करते हुए स्वतंत्रता के दीप जलाने वाले नौजवानों की खोज की है -

"पूछ तू सिकताकण से हिमपति!
तेरा वह राजस्थान कहाँ !
वन-वन स्वतंत्रता-दीप लिये,
फिरने वाला बलवान कहाँ!"[1]

दिनकर का हृदय स्वभावतः ही राष्ट्रीय है। उनकी अधिकांश: रचनाएं राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत हैं।

शोध विस्तार

आज दिनकर की कविताएं पढ़ कर राष्ट्रीयता को भारतीयता के सांचे में लाने की आवश्यकता है। उनकी काव्य रचनाएं बताती हैं कि भारतीयता कैसे राष्ट्रीय हो सकती है। आज भारतीय होने से पहले जो राष्ट्रीय होने का दंभ इस देश में भर रहे हैं, वह हमारे सांस्कृतिक इतिहास को कलंकित ही करेंगे। अपने लोक और देश से विमुख व्यक्ति भारतीय नहीं हो सकता और भारतीयता से अपरिचित राष्ट्रीय कैसे? आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने एक निबंध में इस बात को बहुत ही सूक्ष्म ढंग से समझाया है- "यदि किसी को अपने देश से प्रेम है तो उसे अपने देश के मनुष्य,पशु,पक्षी, लता,गुल्म,पेड़,पत्तों,वन,पर्वत,नदी,निर्झर सबसे प्रेम होगा, सबको वह चाहभरी दृष्टि से देखेगा,सबकी सुध करके वह विदेश में आँसू बहाएगा। जो यह भी नहीं जानते कि

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

कोयल किस चिड़िया का नाम है, जो यह भी नहीं सुनते कि चातक कहाँ चिल्लाता है, जो आँख भर यह भी नहीं देखते कि आम प्रणय सौरभपूर्ण मंजरियों से कैसे लदे हुए हैं।[2]

राष्ट्रकवि दिनकर की चेतना महान है, वे संवेदनाओं एवं संचेतनाओं के साहित्यकार हैं। भारतीय संस्कृति और अस्मिता की जमीन से जुड़े साहित्यकार हैं,दिनकर जी। उनके काव्य ने समय-समय पर भारतीय युग चेतना को राष्ट्र की अस्मिता के प्रति उद्वेलित किया है। मन मानस को राष्ट्रीयता से आपूरित किया है। एतदर्थ राष्ट्रकवि दिनकर का काव्य प्रासंकितापूर्ण है और यह प्रासंगिकता युग-युग का प्रतिनिधित्व करती है। इसलिए राष्ट्रकवि दिनकर हिन्दी साहित्य-संसार में अमर है उनका काव्य भारतीय संस्कृति-भारतीयता से परिचित कराता है उनकी दृष्टि में भारत एक भू-खण्ड मात्र नहीं है। एक विचारधारा है जो भारतीयता से अंगीकृत है। उन्हीं के शब्दों में -

"भारत नहीं स्थान का वाचक, गुण विशेष नर का है,
एक देश का नहीं, शील यह भू-मण्डल भर का है।
जहाँ कहीं एकता अखण्डित, जहाँ प्रेम का स्वर है,
देश-देश मे वहाँ खड़ा, भारत जीवित भास्वर है।"[3]

कवि अपने युग का प्रतिनिधित्व करता है। किसी भी कवि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में युग प्रतिबिम्बित होता है। स्वयं कवि ने स्वीकार किया है- "कवि मानवता का वह चेतन यंत्र है जिस पर प्रत्येक भावना अपनी तरंग उत्पन्न करती है। जैसे भूकम्प मापक यंत्र से पृथ्वी के अंग में कहीं भी उठने वाली सिहरन आप से आप अंकित हो जाती है।"[4]

रामधारी सिंह दिनकर जी के काव्य में प्रणय और राष्ट्रीयता की दो समान धाराएँ प्रवाहित हुई हैं,जो कभी कभी दुविधा को भी जन्म देती है। दिनकर जी ने यह स्वीकार किया है कि राष्ट्रीयता ने उन्हें बाहर से आकर आक्रांत किया है और फिर भी राष्ट्रीयता उनके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बन गयी है। आपने सबसे पहले सामाजिक जीवन की चुनौती को स्वीकार किया है। उनकी कविताओं में खुलकर क्रांति का शंखनाद सामने आया है। हुँकार की प्रमुख

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

कविता दिनकर जी की राष्ट्रीय भावना को विकास समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं। दिनकर जी ने वर्तमान के स्वर को सुना और अपना सब कुछ बलिदान करने के लिए तैयार हो गए। पराधीनता की बेबसी का जुआ उतारने के लिए वे निर्भीक होकर शान्ति के मार्ग पर चलने का सन्देश देने लगे -

"वर्तमान की जय अभीत हो,
खुलकर मन की पीर बजे,
एक राग मेरा भी रण में,
बंदी की ज़ंजीर बजे।
नई किरण की सखी, बाँसुरी,
के छिद्रों से कूक उठे,
साँस-साँस पर खड्ग-धार पर नाच हृदय की हूक उठे।"[5]

कवि को नए युग की आहट सुनाई पड़ती है। उसकी क्रांति की शक्ति पर पूरा विश्वास हो गया है। धर्मपाल सिंह कहते हैं कि "कवि ने जब काव्य जगत में प्रवेश किया उस समय भारतीय राजनीति हलचल के दौर से गुजर रही थी। भारत अंग्रेजों का गुलाम था।"[6]

इन परिस्थितियों में तत्कालीन समाज के यथार्थ चित्रण ने ही कवि दिनकर जी को विशेष ख्याति प्रदान की। कवि ने अपने युग को बड़ी ईमानदारी से सशक्त स्वर में वाणी दी है। किसानों और मजदूरों के जवान बेटों को युद्धों में झोंक दिया हो- ऐसे राष्ट्रीयता के सौदागरों के लिए दिनकर की कविताएं आज भी झन्नाटेदार सांस्कृतिक तमाचा हैं। बनावटी राष्ट्रवाद पर दिनकर की ये पंक्तियाँ देखी जा सकती हैं-

"वह कौन रोता है वहां
इतिहास के अध्याय पर
जिसमें लिखा है नौजवानों के लहू का मोल है
प्रत्यय किसी बूढ़े कुटिल नीतिज्ञ के व्यवहार का
जिसका हृदय उतना मलिन जितना कि शीर्ष वलक्ष है।"[7]

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

'दिनकर' जी के काव्य में राष्ट्र के प्रति गौरव गान के साथ राजनीतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक क्रान्ति के जो स्वर गूंजते थे उन्हें असंख्य युवकों के हृदयों को स्फूर्ति से भर दिया था। स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए देश का क्रान्तिकारी दल जिस प्रकार की कार्रवाई में संलग्न था, कवि उसका समर्थन करता है। 'दिनकर' जी पर क्रान्तिकारियों का इतना प्रभाव बनता गया कि गांधी जी की श्रद्धा भावना भी काम नहीं आई। 'दिनकर' जी के उग्र स्वर पर 1942 के 'जन-विद्रोह' एवं 'आजाद हिंद फौज' के मुक्ति अभियान का भी गहरा रंग है। 'भारत छोड़ो' की घोषणा और जयप्रकाश जी के क्रान्तिकारी ओजस्वी एवं कर्म निष्ठ व्यक्तित्व की जीवित अनुभूति है। जयप्रकाश जी कवि के लिए क्रान्ति की आत्म-बलिदानी भावना का प्रतीक रहा है। सिर पर कफन बांधकर सर्वस्व होम देने वाले राष्ट्र भक्ति का वाचक रहा है। कवि देश की स्वतन्त्रता के लिए आक्रोश प्रकट करते हुए कहते हैं-

"रक्त है या नसों में क्षुद्र पानी।
जाँच कर तू सीस दे देकर जवानी।"[8]

कवि केवल अतीत के गौरव की स्मृतिमात्र से संतुष्ट नहीं है, वरन उनसे प्रेरणा लेकर भारतमाता की गुलामी की बेड़ियों को काटने की प्रेरणा भी देता है। कवि का आह्वान है-

"समय मांगता मूल्य मुक्ति का, देगा कौन मांस की बोटी।
पर्वत पर आदर्श मिलेगा, खाएं चलो घास की रोटी।"[9]

परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ी हुई भारतभूमि से कवि स्पष्ट शब्दों में पूछता है

"ओ भारत की भूटि वंदिनी ! जंजीरों वाली !
तेरी ही क्या कुक्षि फाड़कर जन्मी थी वैशाली।"10

कवि भीख में वह आग मांगता है जो देश की गुलामी, शोषण और अत्याचार को भस्म कर दे। कवि अपनी कलम से भी उन वीर सपूतों को जय बोलने में गौरव मानती है जो मातृभूमि के लिए अपना बलिदान देने के लिए तत्पर थे। इसीलिए कवि कहता है-

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

"कलम, आज उनकी जय बोल।
जला अस्थियां बारी-बारी, छिटकाई जिसने चिंगारी,
जो चढ़ गए पुण्य बेदी पर बिना गरदन का मोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।"[11]

'दिनकर' जी की क्रान्ति की अभिव्यक्ति मात्र राजनीतिक असंतोष के पक्ष में ही नहीं आर्थिक शोषण के संदर्भ में भी हुई है। कवि की संवेदना निम्न पंक्तियों में देखी जा सकती है-

"स्वानों को मिलता दूध, वस्त्र, भूख से बालक अकुलाते है।
माँ की हड्डी से चिपक ठिठुर जाड़ों की रात बिताते है।
युवति के लज्जा-वसन बेच जब व्याज चुकाये जाते है।
मालिक जब तेल फुफलों पर पानी सा द्रव्य बहाते है।"[12]

कवि दिनकर जी ने भारत की दुर्दशा पर गहरा असंतोष व्यक्त किया है। लेकिन भारतीय नौजवानों के साहस को सशक्त अभिव्यक्ति देते हुए कवि कहते है-

"गरजकर बता सबको,
मारे किसी के मरेगा नहीं हिन्द देश।
लहू की नदी तैर कर आ गया है,
कहीं से कहीं हिन्द देश।
लड़ाई के मैदान में चल रहे हैं,
ले के हम उसका निशान ।
खड़ा हो जवानी का झण्डा उठा,
ओ! मेरे देश के नौजवान।"[13]

कवि दिनकर जी ऐसे स्वरों को गाना चाहता है। जिससे सारी सृष्टि सिहर उठे। देश में व्याप्त अत्याचार, आडंबर और अहंकार को दूर करने के लिए वह शंकर के ताडंव तत्जन्य ध्वंस की कामना भी करते है -

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

"विस्फारित लख काल नेत्र फिर,
कांपे त्रस्त अतनु मन ही मन स्वर-स्वर भर संसार,
ध्वनित हो नगपति का कैलाश शिखर
नाचो हे नटवर नाचो नटवर।"[14]

राष्ट्रीय चेतना से ओत प्रोत 'हुंकार' कवि दिनकर का दूसरा काव्य संकलन है जिसका प्रकाशन सन 1928 ई. में हुआ। हुंकार का कवि तूफान का आह्वान करता है। कवि स्वर्ग तक को जला देने की इच्छा व्यक्त करता है। 'आलोक धन्वा' काव्य में दिनकर क्रान्ति द्रष्टा के रूप में उपस्थित होते हैं। उनका रूप बड़ा दिव्य और ज्वलंत है -

"ज्योतिर्धर कवि मैं ज्वलित और मंडल का
मेरा शिखण्ड अरूणाभ किरीट अनल का
रथ में प्रकाश के अश्व जुते हैं मेरे,
किरणों में उज्जवल गीत गुंथे है मेरे।"[15]

हुंकार की कविताओं में सर्वत्र मानव पीड़ा विद्रोह की ऊर्जा और बलिदान का स्वर गूँज रहा है। इसका धरातल सामाजिक और राष्ट्रीय दोनो हैं। इसमें आने वाले संदर्भ दोनों के है कवि को सामाजिक विषमता का बड़ा स्पष्ट बोध है। वे समझते है कि एक ओर किसान मजदूर हैं जो श्रम करके भी भूखे रहते है, दूसरी ओर परोपजीवी वर्ग है जो शोषणजन्य भोग विलास का सुख लूट रहा है। कवि ने शोषित वर्ग की पीड़ा और शोषक सभ्य क्रूरता के तनाव को उद्घाटित किया है। ऐसे तटस्थ और चालाक लोगों को फटकारता हुआ कवि कहता है-

"अब समझा, चुप्पी कदर्यता की वाणी है,
बहुत अधिक चातुर्य आपदाओं का घर है।
दोषी केवल वही नहीं, जो नयनहीन था,
उसका भी है पाप,आँख थी जिसे,
किन्तु जो बड़ी-बड़ी घड़ियों में मौन तटस्थ रहा है।"[16]

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

निष्कर्ष

दिनकर के काव्य का अवलोकन करने से यह ज्ञात होता है कि उनका काव्य राष्ट्रीय चेतनाओं से परिपूर्ण है कवि दिनकर ने अपने साहित्य सृजन का प्रारम्भ ही राष्ट्रीय चेतना से सम्बन्धित काव्य सृजन से किया और अलग-अलग संदर्भों में राष्ट्रीय चेतना को अपने काव्य में दर्शाया है। कवि दिनकर ने अपने युग का प्रतिनिधित्व अपने काव्य में किया है। दिनकर की सोच राष्ट्रवादी सोच है और स्वदेश गौरव तथा स्वाभिमान उनमें कूट-कूटकर भरा है, कवि गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित है किन्तु वे अहिंसा के बल पर नहीं बल्कि हिंसा के बल पर देश को आजाद कराना चाहते है। कवि दिनकर स्वतंत्रता की रक्षा के लिए सभी कुछ न्यौछावर कर देने तथा स्वयं को भी बलिदान कर देने की भावना को प्रोत्साहित करते है। स्वतन्त्रता-पूर्व की रचनाओं में कविवर 'दिनकर' की राष्ट्रीय काव्य-चेतना केवल देश-प्रेम (भारत) तक सीमित थी किन्तु शायद उसी का विकसित रूप आदर्श की रचनाओं में अंतराष्ट्रीयता और मानवतावाद के रूप में मिलता है।

अतः हम कह सकते है कि 'दिनकर' जी राष्ट्रीयता वास्तव में भाववादी राष्ट्रीयता है जिसमें चिंतन की संगति की अपेक्षा आवेग और आक्रोश है। परतन्त्रता के कारण अंग्रेजों के शोषण और अत्याचारों की प्रतिक्रिया का शक्तिशाली रूप 'दिनकर' के काव्य में दृष्टिपात होता है।

सन्दर्भ सूची

1. कुरुक्षेत्र/रामधारी सिंह दिनकर
2. उर्वशी/रामधारी सिंह दिनकर
3. रश्मिरथी/रामधारी सिंह दिनकर
4. दिनकर का प्रबंध- शिल्प/डॉ. नवीन कुमार
5. राष्ट्रकवि दिनकर/डॉ.यतीन्द्र तिवारी
6. संस्कृति के चार अध्याय/रामधारी सिंह दिनकर